卐 ॐ 卐

मंगल कामना के प्रतीक

वैदिक ऋषियों ने वास्तुशास्त्र, स्थापत्यकला, मूर्तिकला, राग-रागिनियाँ, वाद्य-संगीत, नाट्य-लीला, अभिनय-कला, भरत-नाट्यम्, कुचीपुड़ी, ओडिसी आदि का आविष्कार करके मानव जीवन को विविध प्रकार से सजाया तथा समृद्ध किया है। उपरोक्त विद्याओं में मुख्य बात यह है, कि वे सभी ईश्वर की ओर ले जाती हैं अथवा मन को ईश्वर की अर्धांगिनी (प्रकृति) से जोड़े रखती हैं तथा उनमें से प्रत्येक विधा का उद्देश्य मानव मन की हलचल को शान्त करना है एवं उसे समाधि अवस्था तक पहुँचा देना है।

भारतीय मनीषियों ने वास्तु-शास्त्र एवं धर्म-शास्त्रों सहित अनेक शास्त्रों के लेखन में प्रतीकों की भाषा का प्रचुरता से प्रयोग किया है । ***'प्रतीक' मौन की भाषा है । शान्ति का संगीत है तथा संस्कृति की महिमा का मूक गीत है । प्रतीकोपासना अर्थात् बिन्दु में सिन्धु को देखने की विधा है अथवा गागर में सागर को समाहित करने का प्रयास है। प्रतीकोपासना कम से कम चिह्नों द्वारा अथवा जनभाषा के स्थान पर कला की सुन्दर अभिव्यक्ति का माध्यम है।*** जिस प्रकार एक छोटे से बीज में विशाल वृक्ष छिपा रहता है तथा एक छोटे से सूत्र (Formulae) में अनन्त अर्थ समाहित रहता है, उसी प्रकार प्रत्येक प्रतीक के पीछे भव्य भावना की सुगंध छिपी रहती है । यह भावना ही प्रतीक को सार्थक, सामर्थ्यवान एवं प्राणवान बनाती है।

वास्तु-शास्त्र के नियमों के अनुसार निर्मित गृह, शक्ति से पूरित होता है । इससे गृह-स्वामी समेत पूरे परिवार को निरन्तर शक्ति प्राप्त होती रहती है, परिणामस्वरूप सभी सदस्यों के मनोबल में वृद्धि, जीवन के आरोह-अवरोह काल में संघर्ष करने की क्षमता तथा सुख, शान्ति एवं समृद्धि का प्रवाह सतत् बना रहता है।

प्रत्येक मानव की इच्छा रहती है, कि उसका सदैव मंगल होता रहे, इसके लिए वह परिश्रमपूर्वक धनोपार्जन करता है, अनेक मांगलिक कार्य करता है, जिससे वह सदैव प्रसन्न चित्त तथा उत्साहित बना रहे । इसी भावना को मूर्तरूप देने हेतु गृह को अनेक मंगल प्रतीकों से सजाया जाता है, विशेष रूप से गृह की देहलीज से आरम्भ करते हुए गृह के अन्तिम निकास तक की साजो-सज्जा में निम्नांकित प्रतीक बहुधा प्रयोग में आते हैं ।

(a) शुभ सौन्दर्य एवं शक्ति के प्रतीक:-

1. बन्दनवार:- प्राय: लाल कपड़े से बना दरवाजे की चौखट पर सदैव लटकने वाला यह डिजाइनदार बन्दनवार सौन्दर्य का प्रतीक होने के साथ-साथ बाहर से आने वाले अशुभ विचारों को रोकता है । समाज में अनेक प्रकार के ईर्ष्यालु लोग सुखी परिवार के प्रति दुर्भावनापूर्ण विचारों का प्रेषण करते पाये जाते हैं । चूँकि लाल रंग स्फूर्ति कारक है, अतएव यह लाल रंग का बन्दनवार अशुभ विचारों से परिवार की रक्षा करता है। अनेक

घरों में चौखट पर नींबू तथा हरी मिर्चों का गुच्छा लटकाये जाने का भी प्रचलन है, जो रासायनिक प्रक्रिया द्वारा अशुभ विचारों से परिवार की रक्षा करता है ।

परम्परा के अनुसार कुछ विशेष उत्सवों पर, जैसे शादी-विवाह अथवा बच्चे के जन्म पर क्रमशः आम अथवा कनैर के पत्तों से बना बन्दनवार शुभ माना जाता है। जिस प्रकार से मन्दिरों में नित्यप्रति फूलों आदि से मूर्तियों का शृंगार तथा मंदिर प्रांगण को हरा-भरा बनाए रखा जाता है तथा पर्वों के दिनों में यह शृंगार व्यवस्था कुछ अधिक मात्रा में की जाती है, **उसी प्रकार यदि हरे-हरे पत्तें तथा फूलों से बना एक बन्दनवार नित्य चौखट पर लटका कर रखा जाये, तो मानव प्रकृति से जुड़ा रहेगा । इससे उस घर में निरन्तर उत्सव जैसा माहौल रहेगा ।** फूलों व हरियाली से गृह के चारों ओर ताज़गी तथा ऊर्जा का विकीरण होगा । परिवार के सभी सदस्य प्रफुल्ल चित्त रहेंगे । इस प्रकार शुभ का प्रसारण दिन प्रतिदिन बना रहेगा । परन्तु पर्वों एवं त्यौहारों, जैसे-राम-जन्म, कृष्ण-जन्म, दशहरा, दीपावली, होली, दोनों नवरात्रों आदि पर यह **'शुभ प्रतीक'** का प्रयोग अधिक भव्यतापूर्वक किया जा सकता है, जो परिवार में हर्ष उत्पन्न करने में सहायक होगा ।

2. रंगोली:- रंग-बिरंगे रंगों से बनी यह **'आकृति'** अत्यन्त कलापूर्ण होती है तथा गृहस्वामी समेत पूरे परिवार के लिए इस सौन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति से ऊर्जा प्राप्त होती है । घर से बाहर जाते समय अथवा गृह में प्रवेश करते समय गृह देवियों द्वारा निर्मित मन को मोह लेने वाली यह कलाकृति शक्ति रूपा बनकर पूरे परिवार के मनोबल एवं हर्ष की वृद्धि करती है तथा परिवार के सभी सदस्यों को रंग चिकित्सा का अनायास ही लाभ हो जाता है । लाल रंग से स्फूर्ति, नारंगी रंग से ओज, पीले रंग से प्राण, हरे रंग से बुद्धि का संतुलन, नीले रंग से मन की एकाग्रता, आकाशीय नीले रंग से चित्त की शान्त अवस्था तथा बैंजनी रंग से अहंकार को गलित करने में सहायता मिलती है ।

3. ऋद्धि-सिद्धि एवं शुभ लाभ:- परम्परा के अनुसार इन चार अक्षरों को मुख्य दरवाजे के साथ वाली दीवार पर लिखे जाने का नियम है, जिसका भाव यह है, कि घर परिवार अथवा आने-जाने वाले की दृष्टि पड़ने पर वे अक्षर देखे एवं पढ़े जायें, ताकि अक्षरों में निहित रंग तथा अर्थ देखने अथवा पढ़ने वाले के अन्तर्मन तक उतर जायें, जिससे शक्ति तथा शुभ भावना का प्रसारण स्वतः होता रहे । अक्षरों के अलग-अलग रंग होते हैं, जिनके लिखे जाने मात्र से रंगों का वायुमण्डल में प्रसारण निरन्तर होता रहता है । वास्तु-शास्त्र के नियमों के अन्तर्गत निर्मित गृह, शुभ प्रतीकों से अधिकाधिक शक्ति पूर्ण बन जाता है ।

4. स्वस्तिक (卐):- यह चिह्न ऋद्धि-सिद्धि एवं **'शुभ-लाभ'** के साथ ही लिखे जाने की परम्परा है । यह गतिशीलता का प्रतीक है । चूँकि पूरी सृष्टि निरन्तर गतिशील है, अतएव यह प्रतीक प्रकृति के साथ सतत् संतुलन बनाये रखने का द्योतक है, अतः शुभ है । ***स्वस्तिक की गति घड़ी की सुइयों के घूमने की दिशा में होने से केन्द्र से बाहर की***

और शक्ति का प्रसारण होता है, जिसका लाभ पूरे परिवार तथा जो भी इस घर के आस-पास से गुजरता है, उसको भी प्राप्त होता है । प्राय: व्यापारियों के बही-खातों के प्रथम पृष्ठ पर उपरोक्त चारों अक्षरों के लिखने की परम्परा है । मेरे विचार से स्वस्तिक तथा **'ऋद्धि-सिद्धि'** एवं **'शुभ-लाभ'** को 'कम्पाउन्ड-वाल' (Compoundwall) के भीतर तथा बाहर दोनों ओर लिखा जाये, तो प्रत्येक अन्दर आने तथा बाहर जाने वाले की दृष्टि हर समय इन प्रतीकों पर बारम्बार पड़ेगी और शुभ भावना तथा शक्ति का लाभ सभी को सतत् मिलता रहेगा ।

(b) सुख समृद्धि तथा पूर्णता का प्रतीक:-

5. कलश (**):-** गृह के प्रवेश द्वार पर श्रीफल (नारियल) समेत उकेरी गयी यह कलश की आकृति पूर्णता, समृद्धि तथा सुख का भाव जगाती है । चूँकि कुम्भ (घड़ा) जल से पूरित होता है तथा जल समृद्धि (लक्ष्मी) का प्रतीक है, अतएव इस प्रतीक के दर्शन परिवार के लिए सुख-शान्ति का सृजन करता है । श्रीफल बाहर से कठोर और भीतर कोमल तथा मधुर होता है, **अत: यह प्रतीक इसी प्रकार के जीवन जीने की शिक्षा देता है, कि सत्य को कठोरता से धारण करते हुए हृदय में कोमलता और माधुर्य भरा होना चाहिए।**

इस प्रतीक पर मन को एकाग्र करके परिपूर्णता, संतुष्टि, समृद्धि की भावना का स्व-संकेत (Auto-Suggestion) अपने अन्तर्मन तक नित्य प्रति पहुँचाया जाये, तो चित्त की सृजनात्मक शक्ति उस स्व-संकेत को ग्रहण करके क्रियाशील हो उठती है और साधक की इच्छा पूर्ति का मार्ग प्रशस्त होता है । वस्तुत: सभी प्रतीकों का दर्शन इसी भावना से करने से गृहस्वामी समेत परिवार के हर सदस्य को लाभ पहुँचता है। प्रतीकों का गृह द्वार पर स्थापित करने का मूल उद्देश्य यही है । किसी महत्वपूर्ण कार्य हेतु बाहर जाते समय मंगल कामना का प्रतीक जल से भरे कुम्भ (घड़े) का दर्शन कृत्रिम रूप से भी करवाया जाता है । भाव यही है, कि उस कार्य में सफलता मिले।

(c) शिक्षाप्रद प्रतीक:-

6. देहलीज:- गृह के मुख्य दरवाजे के नीचे लगभग तीन इंच ऊँची एक रोक बना दी जाती है, जिसे **'देहलीज'** कहा जाता है । ***चौखट पर बनी यह रुकावट, जाने वाले के पैर को रोक कर मानो यह सिखलाती है, कि यदि 'जीवन संघर्ष' की ओर जा रहे हो, तो सदाचार का विस्मरण न करना, जो भी कमाओ वह धर्मपूर्वक कमाना। कुमार्ग पर न चलना। इससे भविष्य में नीचा देखना पड़ सकता है। घर में घुसने पर देहलीज पैर को रोक कर मानो फिर पूछती है; कि बाहर से कोई अपवित्र संस्कार अथवा अपवित्र तरीके से कमाया धन घर में प्रवेश तो नहीं कर रहा है?*** ऋषियों ने कदम-कदम पर हमें धर्माचरण पर चलने की शिक्षा देने की व्यवस्था कर दी है, इन्हें समझना तथा अपनाना हमारा परम कर्त्तव्य है ।

7. मुख्य दरवाजा:- प्राय: वास्तु के अनुसार दरवाजे की चौखट की ऊँचाई स्थानीय जलवायु अति गर्म, अति शीत अथवा अन्दर बाहर के हवाओं के दबाव को ध्यान में रखकर निश्चित की जाती है । अति शीत अथवा अति गर्म जलवायु में मुख्य दरवाजे की ऊँचाई कम रखने का ही विधान है । मन्दिरों के दरवाजे विशेष रूप से छोटी ऊँचाई के इसलिए बनाए जाते हैं, ताकि अति शीत अथवा अति ताप के अतिरिक्त मन्दिर के अन्दर जो शक्ति पूरित हुई है, वह अधिक से अधिक मन्दिर प्रांगण में ही सुरक्षित रहे ।

कम ऊँचाई की चौखट के होने से गृहस्वामी समेत सभी सदस्य बाहर जाते समय अथवा अन्दर आते समय झुककर ही आ जा सकते हैं । ***इसका कदाचित् यह भाव हो सकता है, कि जीवन में नम्रता की परम आवश्यकता है ।*** इस गुण से मानव सभी को अपना बना लेता है । इस सद्‌गुण का स्मरण निरन्तर बना रहे । नीची चौखट हमें यही शिक्षा देती है ।

उपर्युक्त दोनों प्रतीक आधुनिक युग में नहीं बनाए जा रहे हैं, क्योंकि धन कमाने की अंधी दौड़ में चरित्र पर अंकुश बनाए रखने वाले प्रतीकों का भाव ही खो गया है ।

8. दही:- दही का **'शुक्र-ग्रह'** अर्थात् व्यापार अथवा लक्ष्मी से सम्बन्ध है । व्यापार से सम्बन्धित परदेश में यात्रा पर जाते हुए कार्य की सफलता हेतु एक चम्मच दही का माँ अथवा पत्नी द्वारा खिलाए जाने की परम्परा है, ताकि दूर जाने वाले को अपने परिवार जनों का प्रेम तथा सौहार्द याद आता रहे। पेट में खाये गये अन्य भोज्य पदार्थों को दही आसानी से पचा देता है, जिससे यात्रा करते हुए मन प्रसन्न रहता है । इस प्रकार कार्य की सफलता में दही सहायक है।

एक चम्मच दही, एक मन दूध को बदल कर दही बना देता है, अतएव दही का खिलाना इस बात का प्रतीकात्मक संदेश है, ***कि बाहर जाने पर दूसरों से ऐसा व्यवहार करना जैसा दही का होता है अर्थात् दूसरों को अपना जैसा बना लेना, क्योंकि जीवन में सफलता की यही कुञ्जी है ।***

9. कमल (**) :-** भारतीय संस्कृति के विभिन्न प्रतीकों में कमल सबसे अग्र स्थान रखता है तथा इसमें व्यक्त श्रेष्ठ विचार भारतीय संस्कृति की उच्च विचारधारा एवं अनुपम जीवन शैली से पूरा मेल खाता है । ***कमल नि:संगता एवं निर्लिप्तता का प्रतीक है तथा भारतीय संस्कृति का यही आधार है । कीचड़ में उत्पन्न होकर भी सूर्य (ज्ञान) उपासक कमल कीचड़ से पूर्ण रूप से अलिप्त रहता है, अतएव इसी शुभ भाव (ज्ञान) का संदेश इस प्रतीक से मिलता है । मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य भी यही है, जिस पर चलने से मोक्ष की प्राप्ति होती है ।*** अतएव इस प्रतीक का गृह द्वार पर प्रदर्शित किए जाने का भाव है, **कि गृहस्वामी समेत पूरा परिवार इस महान**

लक्ष्य को सदैव स्मरण करता रहे और इस लक्ष्य के अनुसार अपना जीवन भी जिए, ताकि इसी अमूल्य मानव जीवन में ईश्वर की प्राप्ति हो सके ।

भारतीय समाज में अनेक प्रकार के शकुन[a] तथा अपशकुनों को मान्यता प्राप्त है । वस्तुत: शकुन तथा अपशकुन विशिष्ट प्रकार के शक्ति-संयोग (Energy-patterns) हैं, जो प्रकृति में रचनात्मक अथवा विध्वंसात्मक दोनों रूपों में पाये जाते हैं । भारतीय मनीषियों द्वारा इनका विस्तार से अध्ययन किया गया है, तब मान्यता दी गयी है । भूकम्प अथवा ज्वालामुखी विस्फोट से पूर्व पशु-पक्षी उस स्थान को त्यागते देखे जाते हैं । इन पशु-पक्षियों को वायुमण्डल में विध्वंसात्मक कणों (Nutrino Particles) की उपस्थिति का ज्ञान हो जाता है । किसी घर के सामने कुछ दिनों तक कुत्ता रोता है, तो उस घर का कोई सदस्य मरता देखा जाता है । इसी प्रकार निम्नांकित प्रतीक यदि अनायास ही दिखलायी पड़ जायें, तो शुभ तथा कार्य की सफलता के सूचक हैं अर्थात् ये शकुन विभिन्न प्रकार के शक्ति संयोगों (Energy Patterns) को दर्शाते हैं-

(a) नीलकण्ठ पक्षी अपना भोजन करते हुए दायीं ओर हो ।

(b) कौआ खेत में दायीं ओर दिखलायी दे ।

(c) नेवले का दर्शन भी **'शुभ-लाभ'** का संकेत करता है ।

(d) शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु गृहस्वामी के लक्ष्य की दिशा में बह रही हो ।

(e) सुहागिनी स्त्रियाँ बालक को गोद में लिए हुए सिर पर पानी से भरे घड़े लेकर आ रही हों ।

(f) लोमड़ी बारम्बार दिखलायी दे ।

(g) गौएं अपने बछड़े को सामने दूध पिलाती हों ।

(h) हिरणों का झुण्ड बाँयीं ओर से चलकर दायीं ओर आ जाये ।

(i) सफेद सिर वाली चील दिखलायी दे ।

(j) दही तथा मछली का सामने दर्शन हो ।

(k) दो या दो से अधिक ब्राह्मण हाथ में पुस्तक लिए सामने दिखलायी दें ।

जीवन विविधताओं से भरा है । हम सभी जीवात्माएं पूर्णता (परमात्मा) की ओर अग्रसर होने में निरन्तर प्रयास रत हैं । अतएव उसी की महिमा गाने से मानव का कल्याण है।

पिछले चालीस वर्षों के प्रयास से यह ग्रंथ तैयार हो पाया है । ***मेरे लाडले ग्रंथ, विश्व के कोने कोने में जाओ तथा विज्ञान के युग की पीढ़ी के हर भाषा-भाषी विद्वान को झकझोर कर जगाओ और विश्व को भारत के अध्यात्म का संदेश पहुँचाओ, ताकि 'मोक्ष-प्रवण-समाज' की यथाशीघ्र रचना का महती कार्य प्रारम्भ हो*** । मेरी इस आशा को सफल बनाओ । *अस्तु !*

"तन्मय"

हरि: ॐ तत् सत् !

---

a उपरोक्त शकुनों की सूची श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड दो. 302-303 से ली गयी है।